राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका

डॉ0 संगीता गोरंग
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संगीत विभागाध्यक्षा
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फार वूमन
करनाल
Email: sangeetagorang@gmail.com

सारांश

भारत देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है जो समूचे विश्व में अपनी एक गलग पहचान रखता है। अलग–अलग संस्कृति और भाषाएँ होते हुए भी हम सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं तथा राष्ट्र की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए सदैव तत्पर रहते है। संगठन ही सभी शक्तियों की जड़ है, एकता के बल पर ही अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ, प्रत्येक वर्ग में एकता के बिना देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता। एकता में महान शक्ति है। एकता के बल पर बलवान शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है। संगीत ऐसा माध्यम है जिसके जरिए राष्ट्रीय एकता एंव अखण्डता के प्रति एक अलख ज्योत जलाई जाती है जिससे पूरा देश एक माला में पिरोया जा सकता है, भारत वर्ष में भले ही अनेकानेक भाषाएँ बोली जाती हो परंतु संगीत के सात सुरों से उन सभी भाषाई लोगों के हृदय में राष्ट्र के प्रति देशभक्ति का जज्बा पैदा किया जाता है तो वे सभी राष्ट्रीय एकता की एक उम्दा मिसाल पेश करते हैं।

प्रस्तावना

वह देश जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है, भारत कहा जाता है। यहाँ की सन्तान भारतीय कहलाती है। भारत एक गणतन्त्र राष्ट्र है। यहाँ पर अनेक जातियाँ, सम्प्रदाय और धर्म के लोग रहते हैं। राष्ट्र की उत्पति 'राज' धातु से हुई है। हिन्दी शब्दकोश मे राष्ट्र शब्द का अर्थ एक राज्य में बसने वाला पूरा जनसमूह है। भारत में विभिन्न धर्मो, जातियों एवं विभिन्न संस्कृति और रीति–रिवाजों के लोग रहते हैं इसलिए भारत के अनुसार राष्ट्र की परिभाषा इस प्रकार हो सकती है–एक ही शासन के तले एक सुसंगठित एंव सुव्यवस्थित समाज, जो एकता एंव बन्धुत्व की भावना रखता हो, उसे राष्ट्र कहा जाता है। राष्ट्र उन व्यक्तियों से बनता है। जिनके भाव–स्वभाव, अनुभव व संस्कार एक समान है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के मतानुसार भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिश्रण से राष्ट्र का निर्माण होता है।

राष्ट्रीय उत्थान या राष्ट्रीय संकट के समय जब समग्र राष्ट्र एक तन, एक मन होकर खड़ा हो जाता है तब राष्ट्रीय एकता का जीवंत रूप निखरता है। राष्ट्रीय एकता को देखने, परखने के लिए हम प्राचीन भारत में संगीत से विश्लेषण आरम्भ करते हैं तो देखते हैं कि भारतीय कवियों को श्री राम ने इतना आकृष्ट किया कि उन्होंने अपनी–अपनी भाषाओं में अनेकों रचनाएँ कर डाली। जहाँ तमिल भाषा मे कंदिल, तेलगू में रंगनाथ और भास्कर, कन्नड़ में नागचन्द्र और मलयालम में एशुतच्छन ने रामकथाओं की रचना की। वहीं मराठी के मोरोपंत की रामायण, बंगला की कृतवास रामायण, असमिया के माधव कंदिल की रामायण, ओडिया के सरलदास और बलरामदास की रामायण घर–घर में गाई जाती है और पढ़ी जाती है। संत तुलसीदस का रामचरित मानस तो हिन्दी जनता वेद है। इसी प्रकार पूरे भारत में श्रीराम के ऊपर बने लोकगीत और सम्पूर्ण भारत को एकता सूत्र में बांधते हैं। जहाँ उत्तर में श्रीराम बालक रूप में 'ठुमक चलत रामचन्द्र' की ध्वनि की धीमी–धीमी गूंज होती है तो दक्षिण भारत में 'पुरुषोतम राम' जन–मानस के हृदय में विराजित है। राजस्थान में श्रीराम भगवान की होस्यिां गाई जाती है। श्रीराम ने जन्म तो अयोध्या में लिया परन्तु उनके जीवन चरित्र को पूरे भारतवर्ष में गाया जाता है। इस सब का कारण यह है कि श्रीराम ने जो आदर्श और मर्यादाएँ स्थापित की वे जन–जन की आत्मा में उनकी व्यक्तिगत वस्तु बनकर नहीं रहे। भारत राष्ट्र के आदर्श कहलाए।

भक्ति संगीत द्वारा राष्ट्रीय एकताः–

14वीं व 15वी शताब्दी के आस–पास भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ। उस समय सूफियों के सहयोग से जो भी सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन हुआ वह उच्चकोटि की साहित्यिक रचनाओं द्वारा ही सम्भव हो सका जो उस काल के संतों द्वारा रचा गया। जिसमें सांगीतिक पक्ष रखने वाले कवि भी हैं–मीरा, सूरदास, स्वामी हरिदास, तानसेन, कबीर, गुरुनानक, रहीम, नामदेव, चतुर्भुजदास, रैदास आदि ने संगीतमय काव्यों की रचना करके जन–जन तक पहुँचाया। संत काव्य के रचनाकार कवि होने के साथ–साथ संगीतन काव्यों की रचना करके जन–जन तक पहुँचाया। ईश्वर एक है चाहे उसके कितने ही नाम हो। भक्ति–संगीत में कोई उसे राम, रहीम, करीम, अल्लाह, कृष्ण, खुदा, ईश्वर, परब्रहम किसी भी नाम से पुकारे लेकिन भावना सभी की भक्ति द्वारा आत्मसमर्पण की होती है। राष्ट्रीय एकता का एक सजग उदाहरण सम्राट अकबर है। वे आत्मिक सुख–शांति और आनन्द के लिए ललित कलाओं में संगीत को महत्व देते थे। वे मीराबाई और स्वामी हरिदास का संगीत सुनने स्वयं उनके पास तक आते थे।

अनेकों सूफी संत और मुस्लिम संगीत का अध्ययन किया और संगीत में कई प्रयोग करने के साथ संगीत–साहित्य की रचना भी की। संत निजामुदीन औलिया, संगीतज्ञ अमीर खुसरो, फकीर उल्ला अनेक संगीतज्ञ हुए जिन्होंने संगीत को अलग दिशा दी।

संत कबीर भारत के लोगों का ध्यान ऐसे विश्व धर्म की ओर दिलाना चाहते थे, जिनमें न कोई हिन्दु और ना मुसलमान हो, ना ब्रहमण ना शुद्र हो, ना छोटा ना बड़ा हो। उनका संदेश इस तरह है

वही महादेव वही मोहम्मद–ब्रहम आदम कहिए।
को हिन्दु को तुरूक कहावे एक जदयमी पर रहिए।।

दोनों सम्प्रदायों को एक जैसा महत्व दिया है और दोनों धर्म के अनुयायियों को वे बहुत प्रिय है।

हिन्दु कहो तो मैं नही, मुसलमान भी नहीं।
पाँच तत्व का पोटसा शैवी खेलै माहि।।

इस प्रकार अनेकों हिन्दु–मुसलमान संत है और जिनकी हिन्दु–मुस्लिम एकता में विशेष भूमिका है। जिनमें रामानन्द, चौतन्य महाप्रभु, कुंभनदास, रसखान, शेख फरीद, अमीर हसन सिज्जी, शेख बहाऊदीन बाजिम, गेसू दराज इत्यादि।

संगीत द्वारा एकता स्थापित करने में शास्त्रीय संगीत का भी अमूल्य योगदान है। राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में शास्त्रीय विभिन्न राग और ताल अपनी मुख्य भूमिका निभाते हैं। किसी भी धर्म या जाति से सम्बन्धित मनुष्य हो लेकिन सभी रागों व तालों का ऐसा सम्बन्ध है। हर कोई संगीत से मिलने वाले आनन्द में सरोबार हो जाता है। गुरु–शिष्य परम्परा में ही देखा जाए तो हमें वहाँ भी राष्ट्रीय एकता झलकती है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जो समाज में एकता पैदा करने में सक्षम है। कारण यह है कि धर्म, जाति, सम्प्रदाय, प्रान्त के बन्धन से परे है।

चौदहवीं–पन्द्रहवीं शताब्दी के आस–पास सम्पूर्ण भारत में भक्ति और आस्था के एक आन्दोलन ने संतों के एक नवीन वर्ग को जन्म दिया। इन संतों ने भारत को जोड़ने का कार्य किया। इनमें रामानन्द, नामदेव, कबीर, नानक, दादू व रविदास आदि के नाम प्रमुख हैं। भक्ति आन्दोलन के समय सांगीतिक पक्ष रखने वाले अन्य कवि भी हुए हैं। इनमें से प्रमुख हैं–मीरा, सूरदास, स्वामी हरिदास, परमानन्द दास, गोस्वामी, तुलसीदास, नन्ददास तथा नायक आदि। मीरा व सूरदास आदि ने संगीतमय काव्य लिखकर उन्हें जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इन संतों का मुख्य उद्देश्य बंधुत्व की भावना जागृत करना और देश की संस्कृति व साहित्य एवं अखण्डता को बनाए रखना था। भक्त प्रहलाद ने भक्ति के नौ अंग बताए हैं, उनमें से संगीत भी एक है। वेदों में भी भक्ति का निरूपण मिलता है। भगवान कहते हैं कि जो भक्ति रस अथवा भावना में डूबकर हंसता है, रोता है नामों का स्मरण करता है, भाव–विभोर होकर झूमने लगता है व सबकी लज्जा छोड़कर कूदने व नृत्य करने लगता है, ऐसा मेरा भक्त सम्पूर्ण जगत को पवित्र करता है।

सही अर्थों में वास्तविक साम्प्रदायिक एकता पूर्ण रूप से संगीत में ही दिखाई देती है। संगीत सम्मेलनों में प्रायः यह देखने में आता है कि मंच पर हिन्दू गायक, मुसलमान सारंगी वादक तथा बड़ाली तबला वादक इत्यादि विभिन्न वर्ण, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय और धर्म के संगीतज्ञ, स्वर और लय का एक साथ रसास्वादन करते हैं और उनके सामने बैठे सभी वर्ण के श्रोता एकता के बन्धन में बंध जाते हैं। भारतीय संगीत में गुरु–शिष्य परम्परागत बन्धनों की परवाह न करके आत्मीय एकता के प्रतीक बन जाते हैं। संगीत में एकता के ऐसे अनेक ज्वलन्त उदाहरण सदियों से ही विद्यमान है। हिन्दू गुरु के मुसलमान शिष्य और मुसलमान गुरु के हिन्दू शिष्य हुए है। पाकिस्तान एक दूसरा राष्ट्र बनकर भारतवर्ष से अलग हो हिन्दुस्तान के गायक इकट्ठे होकर

एक–दूसरे से मैत्रीपूर्ण भावना से मिलते है और मंच पर बैठकर एक साथ दोनों माँ वागीश्वरी की अराधना करते हैं।

देश में राष्ट्रीय एकता के लिए अनेक उपाय किए जा रहे है। आकाशवाणी और फिल्मों में संगीत के माध्यम से सभी वर्गो के लोगों को एक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। एकता पर कई गीतों की रचना की गई है, जिन्हें आकाशवाणी तथा फिल्म के अच्छे–अच्छे कलाकारों द्वारा गवाकर रिकार्ड कर लिया गया है। मुहम्मद रफी द्वारा एकता पर गाया हुआ गीत 'आवाज दो हम एक है' भारतवर्ष के करोड़ों लोगों को एकता के सूत्र में पिरोता है। संगीत जनता के मन को भावनात्मक एकता की ओर ले जाने का अत्यन्त प्रभाव एवं मनोवैज्ञानिक माध्यम है। राष्ट्र गान को एक ही स्वर से गाने से जनता के मन पर गहराई से पड़ता है। वृन्दगान में भी एकता के गीतों की स्वर–रचना करके गाई जाए तो वह अधिक प्रभावी होगी। लोक संगीत युगों से जनता जर्नादन के रीति–रिवाजों व उनके संस्कारों को सजाए हुए अपनी छटा बिखेरता रहा है।

निष्कर्ष

लोकसंगीत ही है जो राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधे है क्योंकि प्रत्येक प्रान्त के व्यक्तियों के मनोभाव एक समान है। केवल भाषा का ही अन्तर है। इसी विभिन्नता में ही एकता है। अनेकों ऐसी फिल्मी गीत है जो राष्ट्रीयता एकता की भावना से ओतप्रोत है। जिसमें देश प्रेम की भावना है। जैसे मोहम्मद इकबाल जी का लिखा गीत–'सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तान हमारा' अन्य गीतों में–'मेरे देश की धरती, सोना उगले उगले हीरे मोती' कवि प्रदीप जो किश्ती निकाल के, इस देश को मेरे बच्चों रखना सम्भाल के एक अन्य गीत–'दे दी हमें आजादी, बिना खड्ग बिना ढाल, साबरमति के संत तूने कर दिया कमाल' ये सब गीत है जो राष्ट्र के प्रति आस्था, प्रेम और देशभक्ति की भावना को उजागर करते है। दूरदर्शन द्वारा संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का संचार किया जा रहा है। मिले सूर मेरा तुम्हारा, तो सूर बने हमारा' और 'हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है' आदि अनेक गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया जा रहा है। विद्यालय एंव महाविद्यालय के द्वारा भी संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को अटूट किया जा रहा है। विद्यालय की दिनचर्या तो प्रार्थना से ही शुरू की जाती है। विद्यालयों में अनेकों सांगीतिक कार्यक्रमों में संगीत को पवित्र गंगा के समान माना है जो गंगोत्री से निकलकर अनेक यात्राएँ करती हुई बिना किसी स्वार्थ के आगे बढ़ती हुई चली जाती है। उसी प्रकार संगीत हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मो व मतों को एक कर देती है। भारतवर्ष की फौज के जवानों को राष्ट्रीय एकता के गीत सिखलाएं जाएँ। जिसमें विभिन्न प्रान्तों एवं जाति के जवानों में भावनात्मक एकता बनी रहे और वे सभी एक होकर अपनी मातृभूमि की रक्षा करें। वास्तव में संगीत में ही समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की महान शक्ति निहित है। जब संगीत के माध्यम से देवलोक और भू–लोक, आत्मा और परमात्मा, भक्त और भगवान के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है तो विभिन्न सम्प्रदायों, जातियों, धर्मों और राष्ट्रों मे मैत्रीपूर्ण एंव सद्भावना युक्त सम्बन्ध स्थापित करना निःसंदेह ही श्रमसाध्य है परन्तु नामुमकिन नहीं। अतः हम कह सकते है कि देश की एकता एवं अखण्डता को कायम रखने के लिए संगीत एक सशक्त माध्यम है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. सत्य भार्गव, राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका, पृष्ठ **2**
2. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृथ्वी पुत्र–राष्ट्र का स्वरूप, पृष्ठ **1**
3. विष्णु पुराण, 2/3111
4. सम्पादक आचार्य रामचन्द्र वर्मा, वहण प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश, पृष्ठ **780**
5. डॉ. श्री एम. मोनियर विलियम, संस्कृत डिक्शनरी, पृष्ठ **876**
6. श्रीमद् भागवत, पृष्ठ **11, 14, 16, 31, 52**